सिम्पसन और उसका गधा

सिम्पसन और उसका गधा
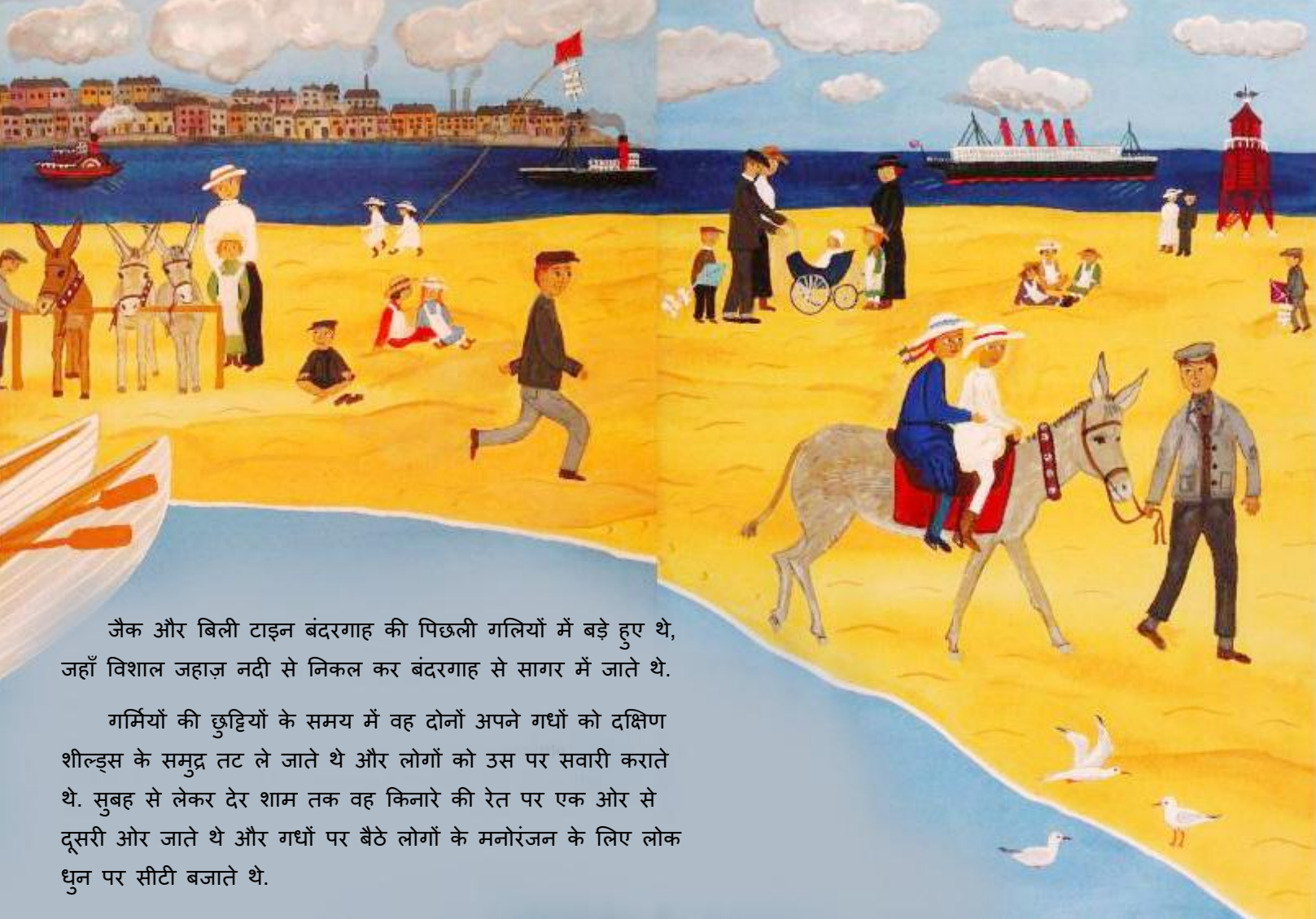
जैक और बिली टाइन बंदरगाह की पिछली गलियों में बड़े हुए थे, जहाँ विशाल जहाज़ नदी से निकल कर बंदरगाह से सागर में जाते थे.

गर्मियों की छुट्टियों के समय में वह दोनों अपने गधों को दक्षिण शील्ड्स के समुद्र तट ले जाते थे और लोगों को उस पर सवारी कराते थे. सुबह से लेकर देर शाम तक वह किनारे की रेत पर एक ओर से दूसरी ओर जाते थे और गधों पर बैठे लोगों के मनोरंजन के लिए लोक धुन पर सीटी बजाते थे.
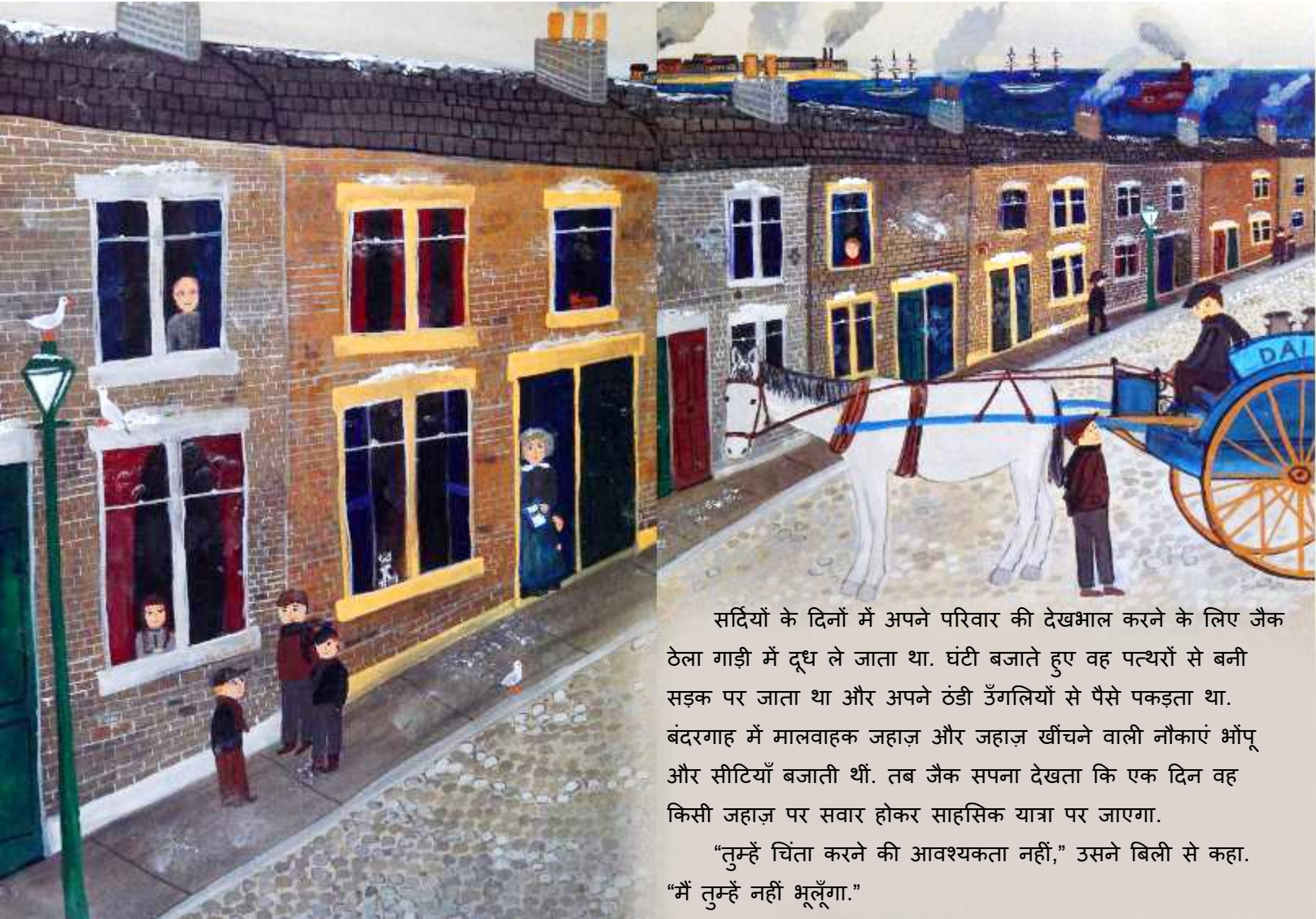
सर्दियों के दिनों में अपने परिवार की देखभाल करने के लिए जैक ठेला गाड़ी में दूध ले जाता था. घंटी बजाते हुए वह पत्थरों से बनी सड़क पर जाता था और अपने ठंडी उँगलियों से पैसे पकड़ता था. बंदरगाह में मालवाहक जहाज़ और जहाज़ खींचने वाली नौकाएं भोंपू और सीटियाँ बजाती थीं. तब जैक सपना देखता कि एक दिन वह किसी जहाज़ पर सवार होकर साहसिक यात्रा पर जाएगा.

"तुम्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं," उसने बिली से कहा. "मैं तुम्हें नहीं भूलूँगा."

सत्रह वर्ष की आयु में जैक को ऑस्ट्रेलिया जाने वाले एक जहाज़ पर इंजन में कोयला डालने का काम मिल गया.

वहाँ उसने झाड़ियों को काटने और हटाने का काम किया.

उसने गन्ने काटने और घोड़े पर बैठ कर मवेशियों की देखभाल करने का काम किया.

उसने कोयले की खान में काम किया और फिर सोने के खोज में निकल पड़ा.

लेकिन जैक को ज़मीन खोदने पर भी कोई धन न मिला. निराश होकर वह लौट आया और फिर से जहाज़ में काम करने लगा. जहाज़ के अंदर वह भट्ठी में कोयला झोंकता.

काश मैं घर लौट पाता, उसने सोचा.

हर किसी को अपना घर ही अच्छा लगता है.

एक बार यात्रा के दौरान जैक किनारे पर छुट्टियाँ मना रहा था, तब उसने सुना कि इंग्लैंड और जर्मनी में युद्ध छिड़ गया था. वह तुरंत सेना में भर्ती हो गया. अपने देश और सम्राट के प्रति अपना कर्तव्य निभाने का समय आ गया था-और तय समय से पहले घर जाने का अवसर भी था.
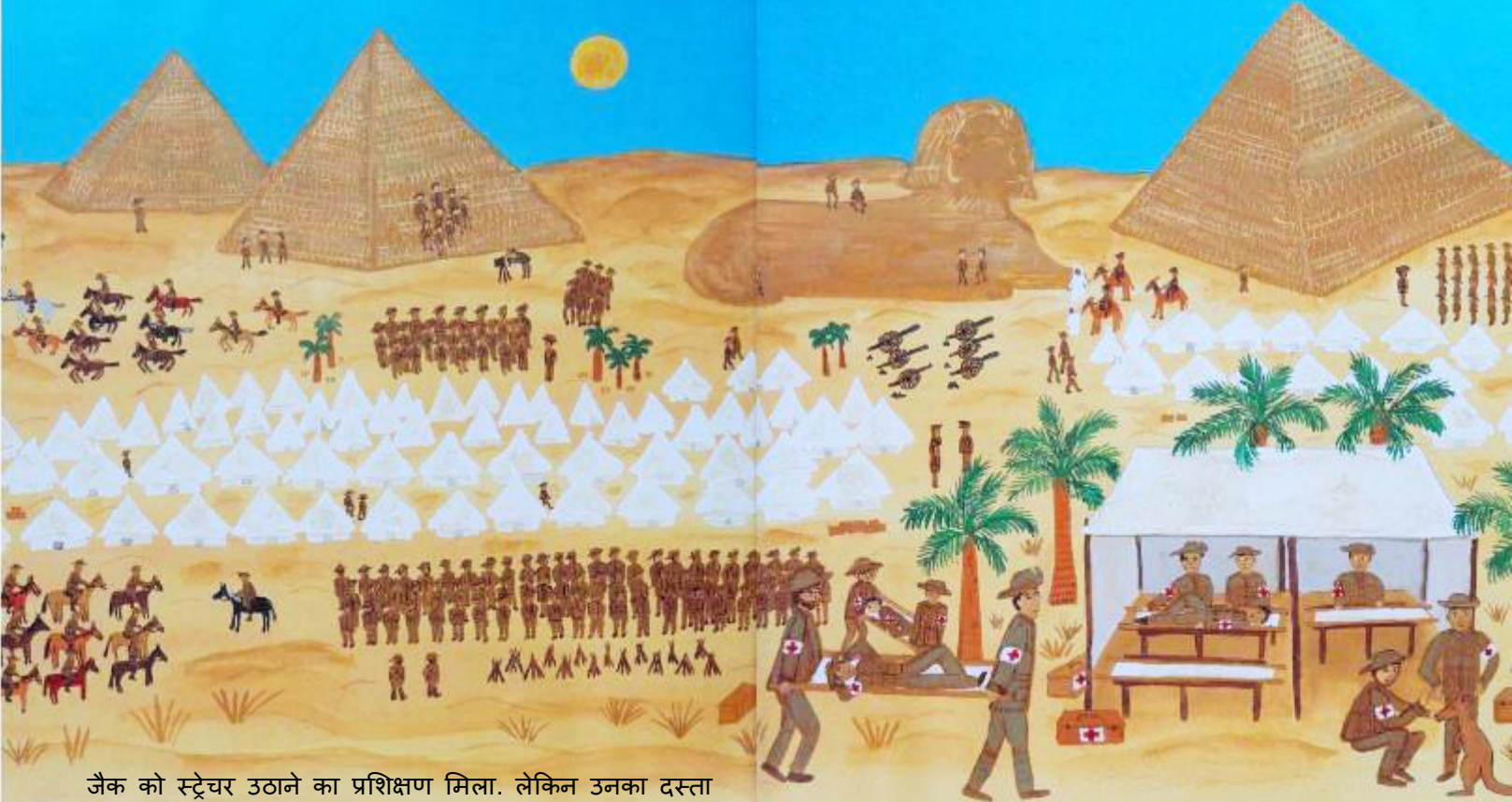
जैक को स्ट्रेचर उठाने का प्रशिक्षण मिला. लेकिन उनका दस्ता जहाज़ में इजिप्ट की ओर चल दिया, न कि इंग्लैंड की ओर, जैसी उसने आशा की थी. वहाँ प्राचीन पिरामिडों के समीप सैनिक युद्ध का अभ्यास करने लगे. जैक रेगिस्तान में पैदल चलता और ताड़ के पेड़ों के बीच लगे टेंट में उन सैनिकों की मरहम-पट्टी करने का अभ्यास करता जो युद्ध में घायल होने का नाटक करते.

जब तुर्की ने युद्ध में प्रवेश किया तो अँगरेज़ कमांडरों ने गैलियोपोली प्रायद्वीप पर आक्रमण करने की योजना बनाई.

जब ऑस्ट्रेलियाई युद्ध में प्रवेश करेंगे तो तुम जान जाओगी कि मैं कहाँ हूँ, जैक ने अपनी माँ को पत्र में लिखा.
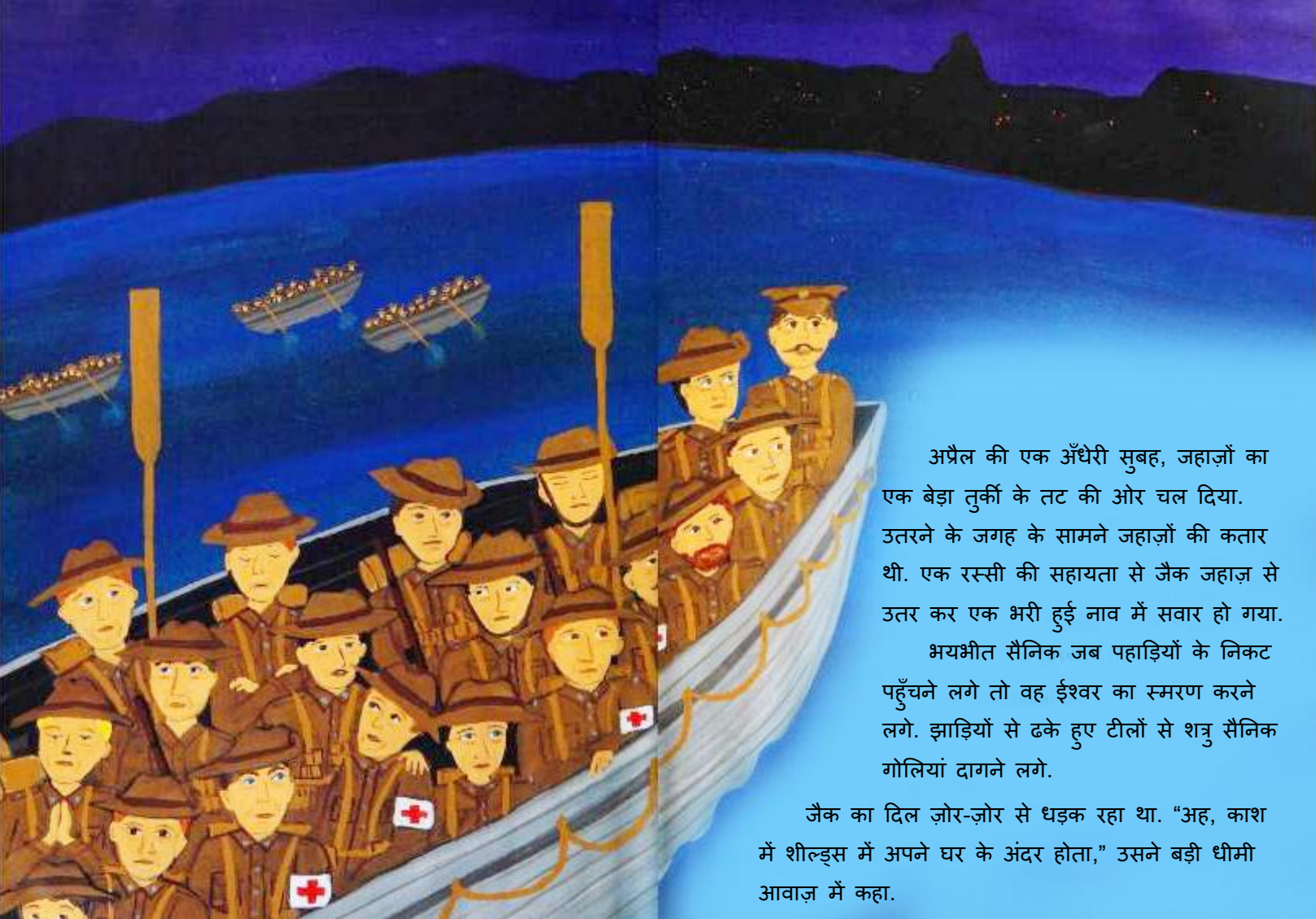
अप्रैल की एक अँधेरी सुबह, जहाज़ों का एक बेड़ा तुर्की के तट की ओर चल दिया. उतरने के जगह के सामने जहाज़ों की कतार थी. एक रस्सी की सहायता से जैक जहाज़ से उतर कर एक भरी हुई नाव में सवार हो गया.

भयभीत सैनिक जब पहाड़ियों के निकट पहुँचने लगे तो वह ईश्वर का स्मरण करने लगे. झाड़ियों से ढके हुए टीलों से शत्रु सैनिक गोलियां दागने लगे.

जैक का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था. “अह, काश में शील्ड्स में अपने घर के अंदर होता,” उसने बड़ी धीमी आवाज़ में कहा.

भोर के समय नावें कंकड़ों से भरे समुद्रतल पर आकर रुक गईं.

तुर्की सेना की मशीनगनें दनदनाने लगीं. समुद्र के पानी में हर तरफ फुहारें उछलने लगीं. एक गोली जैक के सिर के निकट से सनसनाती हुई निकल गई. जैक समुद्र के बर्फीले पानी में लुढ़क गया और पानी में चलते-चलते सागर के ऊपर फैली एक चट्टान के नीचे उसने शरण ली.

सैनिकों ने किनारे पर दावा बोल दिया. उन्हें आदेश था कि ऊंची जगहों को अपने कब्ज़े में ले लें. उन्होंने बन्दूकों के आगे संगीने लगा लीं और टीलों की ओर दौड़ चले. शत्रु तोपों के गोले उनके सिरों के ऊपर फटने लगे और बमों के टुकड़ों की वर्षा खाड़ी में होने लगी.
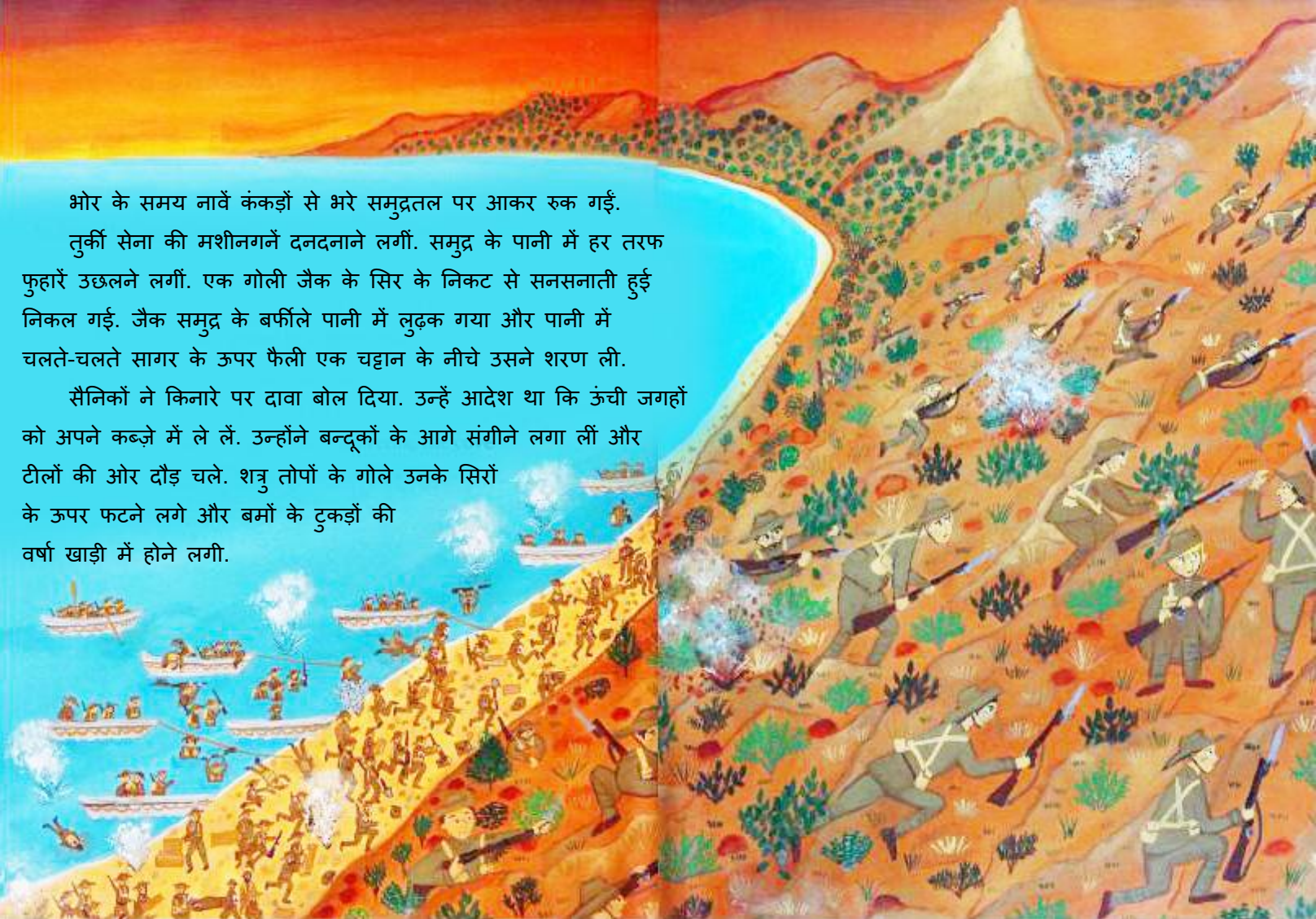
बमों और गोलियों का सामना करते हुए जैक संकरे रास्ते पर चलता हुआ घायलों को युद्धस्थल से उठा कर किनारे पर खड़ी नावों में लाता रहा.

हैल स्पिट पर स्थापित प्राथमिक चिकित्सा का स्टेशन इतने अधिक घायलों के देखभाल करने के लिए पर्याप्त न था. शीघ्र ही स्ट्रेचरों की कमी महसूस होने लगी.

किसी की सहायता के लिए पुकार सुन कर जैक एक घायल सैनिक की ओर जा रहा था जब उसने ताड़ के पेड़ों में खड़ा एक गधा देखा. ऊपर तोप का एक गोला फटा और धातु के टुकड़ों की वर्षा होने लगी. जैक ने इस धमाके की परवाह न की और बमों के टुकड़ों से भरी हुई भूमि पर रेंगता हुआ आगे बढ़ता गया.

"भगवान् तुम्हारा भला करे," उसने गधे के लंबे, रोयेंदार कान में कहा और अपने भयभीत दोस्त का नाम रख दिया, डफ्फी.
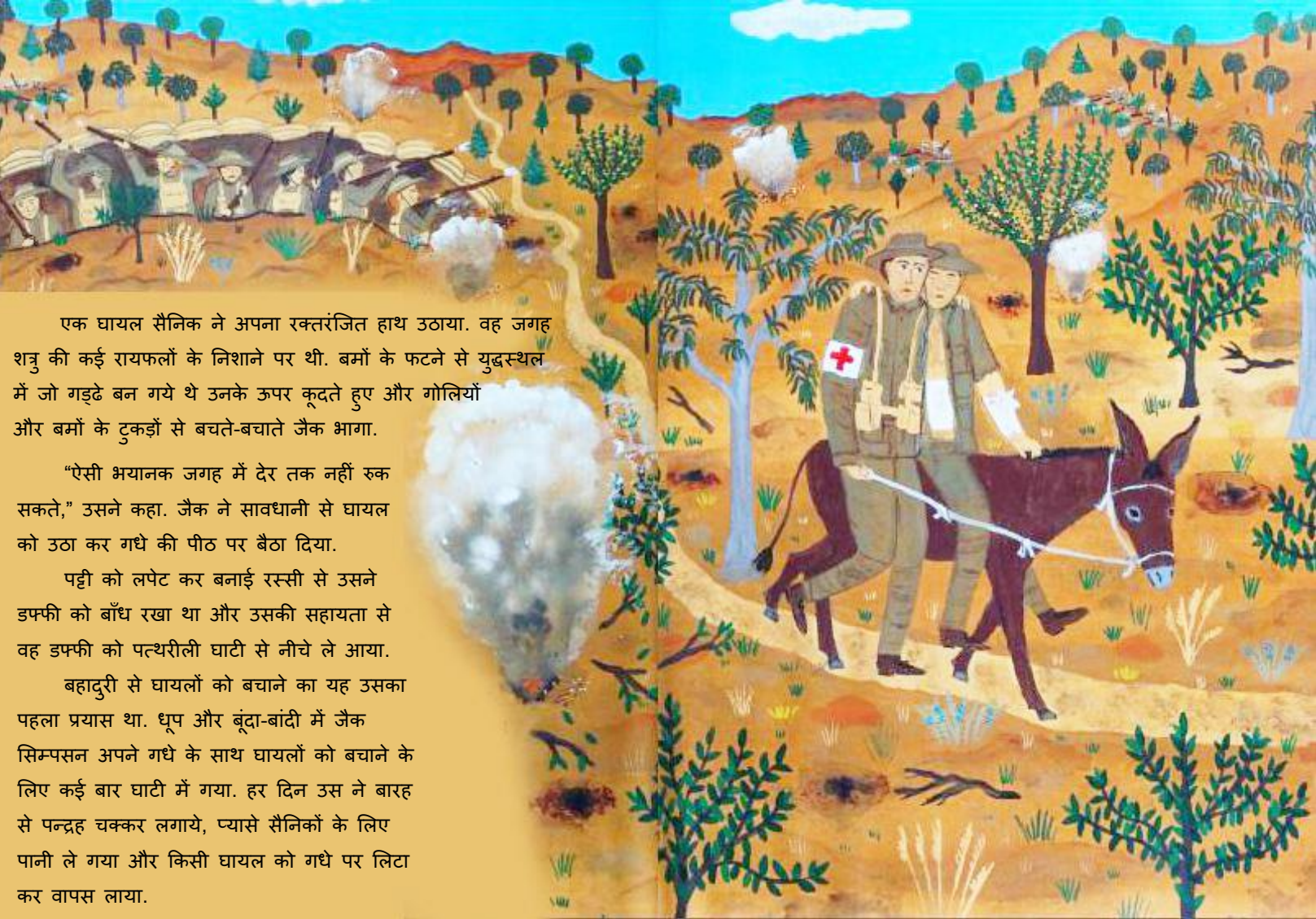
एक घायल सैनिक ने अपना रक्तरंजित हाथ उठाया. वह जगह शत्रु की कई रायफलों के निशाने पर थी. बमों के फटने से युद्धस्थल में जो गड्ढे बन गये थे उनके ऊपर कूदते हुए और गोलियों और बमों के टुकड़ों से बचते-बचाते जैक भागा.

“ऐसी भयानक जगह में देर तक नहीं रुक सकते,” उसने कहा. जैक ने सावधानी से घायल को उठा कर गधे की पीठ पर बैठा दिया.

पट्टी को लपेट कर बनाई रस्सी से उसने डफ्फी को बाँध रखा था और उसकी सहायता से वह डफ्फी को पत्थरीली घाटी से नीचे ले आया.

बहादुरी से घायलों को बचाने का यह उसका पहला प्रयास था. धूप और बूंदा-बांदी में जैक सिम्पसन अपने गधे के साथ घायलों को बचाने के लिए कई बार घाटी में गया. हर दिन उस ने बारह से पन्द्रह चक्कर लगाये, प्यासे सैनिकों के लिए पानी ले गया और किसी घायल को गधे पर लिटा कर वापस लाया.

रात के समय लालटेन की रोशनी में टेढ़े-मेड़े रास्ते से चलाता हुआ, जैक डफ्फी को भारतीय तोपखाने की दस्ते के पास ले आता था और दोनों रात वहीं उनके कैंप में बिताते थे. सिख तोपची डफ्फी को बहादुर के नाम से बुलाते थे-अर्थात सबसे शूरवीर.

जो कोई भी सिम्पसन और उसके गधे को काम करते देखता वह उनकी प्रशंसा करता. कर्नल ने डफ्फी के माथे पर एक सफ़ेद पट्टी बाँध दी थी जिस पर एक रेड क्रॉस बना हुआ था. “मेरे लिए तुम्हारा योगदान सौ आदमियों के समान है,” कर्नल ने कहा.

19 मई की सुबह तुर्की सेना ने एक भयंकर हमला किया. इतनी गोलियाँ और बम चल रहे थे कि किसी के बच निकलना एक चमत्कार से कम न था.

“उस खड्ड के दूसरी तरफ से निशानेबाज़ गोलियाँ मार रहे हैं,” एक सैनिक ने चेतावनी दी.

“सभी होशियार रहो,” जैक ने हाथ हिला कर कहा. “मेरे लौटने तक नाश्ता तैयार कर लेना.”

एक तुर्की सैनिक ने, जिसके पीछे सूर्य उदय हो रहा था, निशाना लगाया और धीमे से राइफल का ट्रिगर दबाया. उसने अपना निशाना उस आदमी पर लगाया था जो एक गधे को सामने एक ऊंचे टीले पर ले जा रहा था.

गोली जैक की पीठ में लगी और उसके हृदय के बीच से निकल गई. सैनिक अपने साथी के शव को खींच कर रास्ते के एक ओर ले आये. सारे दस्ते में यह सूचना फ़ैल गई.
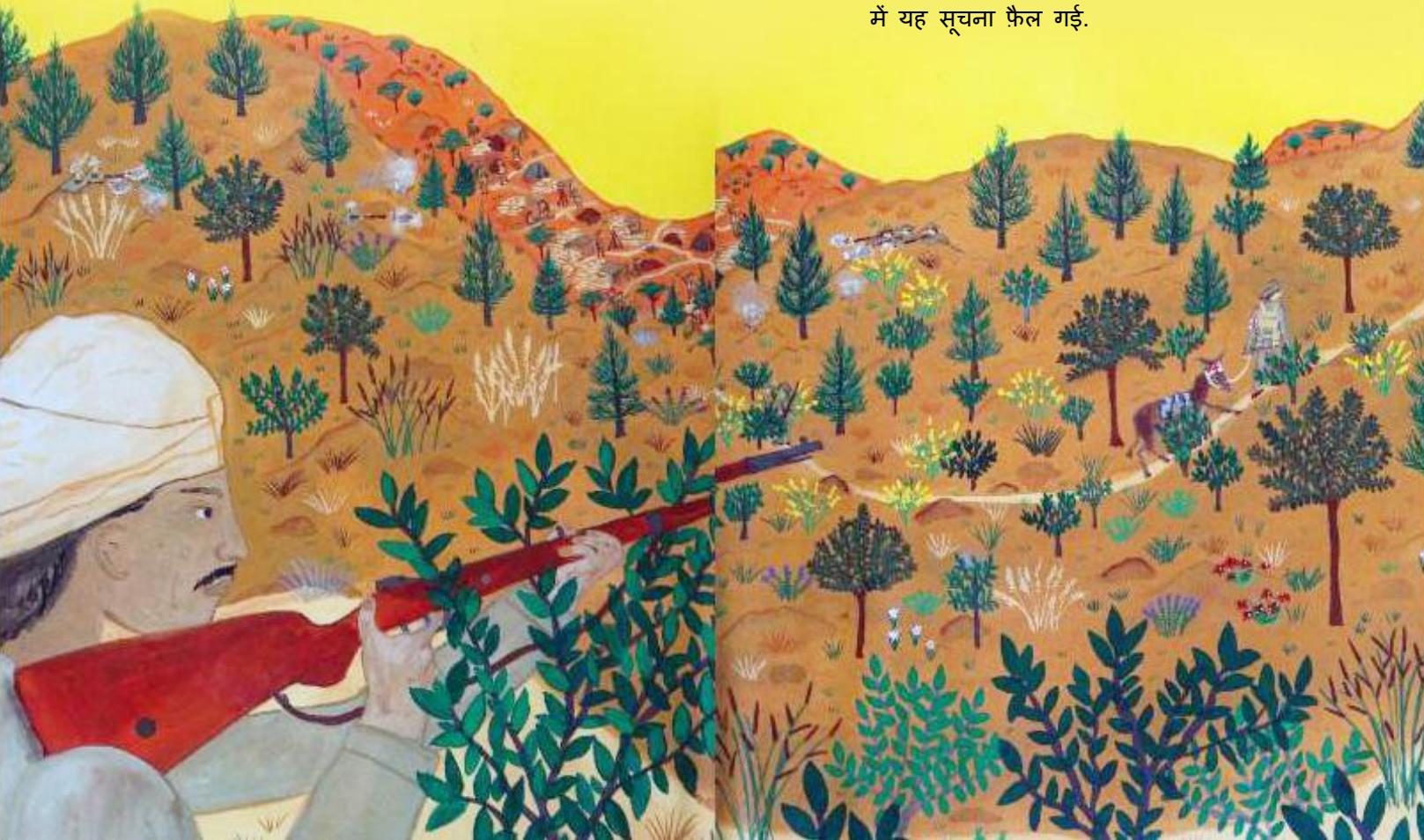
जब डफ्फी अकेला धीरे-धीरे घाटी से नीचे आया तो युद्ध से हताश और थके हुए सैनिकों की आँखें भर आईं. अपनी जान की बाज़ी लगा कर भारतीय तोपची पुष्प इकट्ठे कर के लाये ताकि लकड़ी के क्रॉस को सजाने के लिए पुष्पमाला बनाई जा सके. युद्धस्थल शांत हो गया. मोमबत्तियां उन तारों समान चमक रही थीं जो आकाश से लुप्त हो गये थे. सिम्पसन को हैल स्पिट में दफना दिया गया.

चौबीस दिनों में जैक ने तीन सौ से अधिक सैनिकों को बचाया था. उनमें से एक वह भी था जो टाइन बंदरगाह की पिछली गलियों में बड़ा हुआ था.

"तुम्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं," गोलियों की आवाज़ से ऊंची आवाज़ में जैक ने कहा था. "मैं तुम्हें नहीं भूलूँगा."

जैक ने घायल आदमी को थाम लिया ताकि वह डफ्फी की पीठ से फिसल कर गिर न जाए. जब डफ्फी उसके साथ-साथ चल रहा था, जैक मुस्कराया और लोकधुन पर सीटी बजाने लगा और मौत की उस घाटी से बिली को बाहर निकाल लाया.

कहीं हम भूल न जाएं